वैश्विक रणनीतिक प्रबंध में भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व

धर्मेन्द्र यादव[१], प्रो. अनुराग शर्मा[२]
[१२]शोधार्थी, व्यावसायिक प्रशासन विभाग प्रोफेसर, व्यावसायिक प्रशासन विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश— **वैश्वीकरण के ज़माने में रणनीतिक प्रबंध केवल लाभों तक सीमित नहीं रह गया है, अपितु यह साँस्कृतिक, नैतिक सिद्धांतों और दीर्घकालीन स्थिरता पर केन्द्रित है। भारतीय ज्ञान परंपराओं का आधार भागवत गीता, रामायण, वेद, उपनिषद,योग और ध्यान आदि है, जो समग्र सोच को प्रदर्शित करता है। यह परंपरा संगठनात्मक स्थिरता और समावेशी विकास का मार्ग प्रस्तुत करती है। वैश्वीकरण के इस दौर में कोई भी राष्ट्र स्वयं के आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक विकास हेतु अन्य राष्ट्रों से संबंध स्थापित करता है जिसके तहत वैश्विक रणनीतियों को तैयार करना, उनका उचित प्रबंध करना एवं साथ ही क्रियान्विन करना सम्मिलित है। वर्तमान प्रतिस्पर्धा के युग में लाभ कमाना ही प्रमुख उद्देश्य नहीं अपितु सुचारू रूप से आपसी संबंधों को बनाए रखना आवश्यक है। वर्तमान मे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दो राष्ट्रों के बीच तनाव की स्थिति को देखा जा सकता है जो कि दो राष्ट्रों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक ही नहीं अपितु सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को भी प्रभावित करता है। इसी समस्या के हल हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा द्वारा विकसित वासुदेव कुटुम्बकम अवधारणा को व्यावहारिक रूप दिया जाना आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित प्रबंध सिद्धांतों का वैश्विक रणनीतिक प्रबंधन में उचित रूप से अपनाया जा सकता है। इस शोध का उद्देश्य यह दर्शाना है कि भारतीय ज्ञान परम्पराएं रणनीतिक प्रबंध को एक रास्ता दिखा सकते है तथा वर्तमान चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बना सकते है।**

मुख्य शब्द—**भारतीय ज्ञान परम्परा, राजनीतिक प्रबंध, भागवत गीता, रामायण, उपनिषद, शोध, समावेशी विकास।**

I. परिचय

वैश्विक तकनीक और चुनौतियां तेजी से बदल रही है, एसे समय में भारत को किसी दूसरे देश पर निर्भर नहीं रहना चाहिए बल्कि आत्मनिर्भरता पर अपनी सारी ऊर्जा लगा देनी चाहिए। भारत का इतिहास दर्शन, नैतिकता से परिपूर्ण एवं समृद्ध रहा है। चाणक्य के अर्थशास्त्र हो, भगवत गीता हों, रामायण हो या वेद हो आदि ज्ञान के श्रोत भारत की मिट्टी के इतिहास का प्रतीक है। भारतीय ज्ञान प्रणाली नैतिकता एवं साँस्कृतिक परिपूर्णता की पोषक है। साथ ही सामाजिक जिम्मेदारी, संतुलित निर्णयन एवं दीर्घकालीन भरोसे पर जोर देती है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेशन न केवल संगठनों का समृद्ध बनाता है बल्कि उन्हें अधिक उतरदायित्व नैतिक एवं मूल्यों से युक्त भी बनाया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन का विचार बहुत विस्तृत रूप में है। यह सत्यम, शिवम्, सुंदरम् जैसे मूल्यों पर आधारित है, जो सत्य, कल्याण और सौंदर्य को प्रदर्शित करते हैं।।यही मूल तत्व आज की सतत विकास की अवधारणा से मेल खाते हैं। भागवत गीता एक महान ग्रंथ है जिसमें नेतृत्व और अभिप्रेरणा को मौखिक रूप से बताया गया है। चाणक्य की अर्थशास्त्र में धन, राज्य व्यवस्था का सुंदर चित्रण किया गया है। रामायण में भगवान राम के चरित्र के द्वारा एक अच्छे नेता या प्रबंधक के गुणों के बारे में जानकारी उपलब्ध है।

भारतीय परंपरा में वसुधैव कुटुम्बकम सिद्धांत जो समस्त धरती को अपना परिवार मानता है। यह विचार वैश्वीकरण के समकक्ष है जो संपूर्ण दुनिया को बाजार मानती है। भारतीय ज्ञान परंपरागत हज़ारों वर्षों से दुनिया को रास्ता दिखा रही हैं, जो नैतिकता, समावेशन और मुल्य आधारित व्यवसाय पर जोर देती है।

भारतीय दर्शन में राष्ट्रीय पिता महात्मा गांधी जी का भी बहुत योगदान रहा है, उनके द्वारा ट्रस्टीशिप का सिद्धांत दिया गया। उनके अनुसार पूंजीपतियों को संपति पर अपना हक ना समझकर खुद को उसका ट्रस्टी (संरक्षक) समझना चाहिए और समाज की सेवा को अपनी जिम्मेदारी समझना चाहिए। बिना मेहनत के लाभ को गांधी जी ने अनैतिक माना है।

II. अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय ज्ञान परंपराओं की पहचान करना।
2. वैश्विक रणनीतिक प्रबंध की आधुनिक चुनौतियों का।अध्ययन करना।

3. व्यवसायिक संगठनों में भारतीय ज्ञान परंपराओं के व्यवहारिक अनुप्रयोगों का अध्ययन करना।
4. वैश्विक रणनीतिक प्रबंध में भारतीय ज्ञान परंपराओं की भूमिका।

III. अनुसंधान पद्धति

वैश्वीकरण नीति प्रबंध में भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व विषय पर किए गए शोध, वर्णनात्मक एवं सैद्धांतिक अध्ययन है जिसके अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित प्रबंध सिद्धांतों का विश्लेषण किया गया है जिससे कि वैश्विक रणनीतिक प्रबंधन में व्यावहारिक रूप से क्रियान्वित कर उपयोगी एवं सरलतम बनाया जा सके।

डेटा के स्रोत

शोध के अंतर्गत दस्तावेजी (द्वितीयक) डेटा स्रोत का इस्तेमाल किया गया है। द्वितीयक स्रोत में शोध पत्र , जनरल रिपोर्ट आदि से संबंधित लेख एवं विवरणात्मक अध्ययन को सम्मिलित किया गया है। पौराणिक भारतीय ग्रंथ जैसे रामायण, श्रीमद् भागवत, गीता, वेद, उपनिषद, महाभारत आदि में वर्णित प्रबंध के तरीके नेतृत्व, अनुशासन, टीमवर्क, नैतिकता और नीति सिद्धांतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

IV. अध्ययन का महत्व एवं सीमाएं

यह शोध भारतीय ज्ञान परंपराओं के महत्वपूर्ण विचारों को समझने का प्रयास करता है। साथ ही, यह आज की दुनिया में वैश्विक रणनीतियों को अच्छे और निष्पक्ष तरीके से प्रबंधित करने के तरीके पर भी विचार प्रदान करने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य अच्छे नैतिक मूल्यों को विकसित करने में मदद करना है, ताकि "वसुधैव कुटुम्बकम" (विश्व एक परिवार है) के विचार को वास्तविक रूप से व्यवहार में लाया जा सके। यह अध्ययन बहुत पुरानी कहानियों और लेखों पर आधारित है। यह विचारों और सिद्धांतों पर आधारित है, और इन पुराने ग्रंथों के बारे में विशेषज्ञों के बीच अलग-अलग राय हैं। साथ ही, यह अध्ययन कंप्यूटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी नई तकनीक के बारे में बात नहीं करता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और वैश्विक रणनीतिक प्रबंध के बीच सहसंबंध

रणनीतिक सोच, भारतीय ज्ञान परंपराओं में चाणक्य नीति, महाभारत, रामायण में वैश्विक रणनीतिक प्रबंध की तरह ही दीर्घकालीन योजना, प्रतिस्पर्द्धा एवं जोखिम प्रबंध देखने को मिलता है।

नैतिकता एवं मूल्यों पर आधारित नेतृत्व, भारतीय ज्ञान परम्परा धर्म, सत्य, अहिंसा एवं नीति पर आधारित निर्णयन प्रक्रिया को दर्शाती है एवं वैश्विक प्रबंध में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व एवं ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक, शासन) एवं स्थाई नेतृत्व की नींव है। नैतिक मूल्य एवं टीम भावनाओं को विकसित करने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा संबंधित ग्रंथों में समस्या पर विचार करने हेतु संगोष्ठी का आयोजन किया जाता था, जिसे वर्तमान वैश्विक रणनीति परिपेक्ष में अपना कर आपसी तनावी संघर्ष का समाधान किया जा सकता है। स्वयं का हित नहीं अपितु सर्वांगीण हितों के लिए निर्णय करना जिसका दृष्टांत रामायण में (राम द्वारा राज्याभिषेक को नकारना) स्पष्ट रूप से प्रस्तुत होता है जिससे वैश्विक स्तर पर कोई भी राष्ट्र स्वयं के स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए अन्य राष्ट्र को क्षति ना पहुंचाएं सकारात्मक भावनाओं को विकसित कर अंतरराष्ट्रीय संबंधों को धनात्मक दिशा दी जा सकती है। पौराणिक ग्रंथ भगवद् गीता में कुशल नेतृत्व में (कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए उपदेश) एवं नैतिकता का दृष्टांत देखने को मिलता है जो कि वर्तमान परिपेक्ष में किसी अनैतिक कार्य के लिए डटकर खड़े रहने एवं उसके लिए निर्णय लेने के लिए राष्ट्र को प्रेरित करता है। जिस तरह महाभारत में पांडवों की ओर से अत्यंत कम सैनिकों के बावजूद भी युद्ध के परिणामों मे संभावनाओं के विपरीत सफलता को देखा जा सकता है, उसी के अंतर्गत वैश्विक स्तर पर कुशल नेतृत्व एवं संभावित स्थितियों में सुचारू रूप से निर्णय लेकर वैश्वीकरण नीतियों की ओर अधिक मजबूत बनाया जा सकता है। वर्तमान परिपेक्ष में राष्ट्रो के बीच आपसी तनाव कुछ व्यक्तिगत हितों को सिद्ध करने के कारण से उत्पन्न होते हैं जो कि विश्व में अशांति उत्पन्न करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा, सर्वांगीण विकास एवं सहयोग पर बल देती है। रामायण के संदर्भ में रामद्वारा रावण के लिए बार-बार भेजे गए शांति प्रस्ताव वही महाभारत युद्ध से पूर्व कृष्ण द्वारा कौरवों एवं पांडवों के संधि प्रस्ताव को समझा जा सकता है। जो की आपसी शांति की भावनाओं को व्यावहारिक रूप देने में सहायक सिद्ध होता है। वैयक्तिक संबंध, आधुनिक प्रबंध मानव संसाधन को बहुत महत्पूर्ण मानता है जो भारत की ज्ञान परंपरा के सर्वे भवन्तु: सुखिनः जैसे विचारों से प्रेरित है। मानसिक स्वास्थ्य, प्रतिस्पर्धी वैश्विक कॉर्पोरेट जगत में वर्क लाइफ बैलेंस एवं तनाव प्रबंध महत्पूर्ण हो गए है।भारतीय ज्ञान परंपरा में योग, ध्यान एवं आयुर्वेद इनका उचित प्रबंध करता है। सतत विकास, भारतीय दर्शन जो धरती को भी माँ मानती है, धरती माँ

'वसुधैव कुटुम्बकम' जो आज के वैश्विक रणनीति में पर्यावरण एवं सामाजिक दायित्वों की ओर ध्यान दिलाती है। समग्र दृष्टीकोण,भारतीय परंपरा पहले से ही शरीर, आत्मा, मन, समाज और प्रकृति को एक साथ देखने का दृष्टीकोण रखती है,जो कि आज के वैश्विक रणनीति के समग्र दृष्टीकोण से मेल खाती है।

V. वैश्विक रणनीतिक प्रबंध की चुनौतियां

साँस्कृतिक विविधता: प्रत्येक देश संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज, खान-पान के मामले में भिन्न होते हैं। बाजार की भिन्नता: प्रत्येक देश के बाजार की जरूरतें भिन्न होती है, एक उत्पाद जो भारत में सफल हैं जरूरी नहीं कि वहीं उत्पाद जापान, कनाडा या विश्व के किसी दूसरे देश मे भी सफल हो। कानून एवं राजकीय नीतियां: प्रत्येक देश के अपने कानून, टैक्स नियम एवं व्यापार कानून अलग अलग होते है। व्यवसाय के लिए इस सभी कानूनी औपचारिकताएं पूरी करनी होती है। राजनीतिक स्थिरता: जिन देशों मे राजनीतिक स्थिरता नहीं होती वहा कोई भी व्यवसायिक संगठन स्थापित नहीं हो पाती क्यूंकि पता नहीं कब कौनसा राजनीतिक दल कौनसी विचारधारा को मानते हुए क्या निर्णय करेगा। हमेशा व्यवसायिक अनिश्चितता का वातावरण बना रहता है जो व्यवसाय को हतोत्साहित करता है। प्रतिस्पर्धा एवं तकनीकी परिवर्तन: आज के प्रतिस्पर्धी युग में नवाचार करते हुए प्रतिस्पर्द्धा का सामना किया जा सकता है। दिन प्रतिदिन नयी तकनीक आती है और व्यवसायिक परिवेश में तेजी से परिवर्तन होता है। नैतिक नेतृत्व और सुशासन: आज के वैश्विक युग में सबसे ज्यादा गिरावट हुई है वो है व्यवसायिक नैतिकता। बिना नैतिकता के स्थाई रूप से सफल नहीं हुआ जा सकता।

VI. निष्कर्ष

वैश्विक रणनीतिक प्रबंधन की जटिलताओं और प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में भारतीय ज्ञान परंपरागत स्थाई सतत, नैतिक और दीर्घकालीन दृष्टीकोण प्रदान करता है। भागवत गीता, रामायण, उपनिषद, योग और ध्यान जैसे महाकाव्यों में निहित प्रबंध के सिद्धांत आज के वैश्विक संगठनों को नेतृत्व, संकट प्रबंधन एवं मूल्यों की शिक्षा प्रदान करते हैं। भारतीय दर्शन में लोकहित, धर्म और कर्तव्य जैसे सिद्धांत समावेशी एवं संतुलित रणनीति के विकास पर जोर देती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक प्रबंध तक ही सीमित नहीं है अपितु समाज-कल्याण, पर्यावरण हित और नैतिक उतरदायित्व को भी महत्पूर्ण मानते हैं।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा आधुनिक वैश्विक प्रबंधन के लिए वैकल्पिक और समग्र स्थायी मानवीय दृष्टीकोण के साथ दीर्घकालिक स्थायित्व प्रदान कर सकती है।

VII. सुझाव

वैश्विक रणनीतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए भारतीय ज्ञान परंपराओं का रणनीतिक अध्ययन किया जा सकता है। भारतीय दर्शन पर आधारित (धर्म,कर्तव्य,नैतिकता) सिद्धांतों को अपनाकर नेतृत्व किया जाना चाहिए। कॉर्पोरेट क्षेत्र में तनाव प्रबंध, वर्क लाइफ बैलेंस के लिए भारतीय दर्शन पर आधारित योग एवं ध्यान को अपनाया जा सकता है। केवल लाभ आधारित व्यवसाय की सोच की बजाय लोक हित को जिसमें सामाजिक दायित्वों पूरा करते हुए, समाज के लिए समाज से लाभ पर बल दिया जाना चाहिए। भारतीय दर्शन की गहन स्टडी की जाए एवं वैश्विक मंच पर भारतीय ज्ञानी परंपराओं के महत्व पर प्रकाश डाला जाना चाहिए। भारतीय ज्ञान परम्परा को अनिवार्य रूप से स्कूल और कॉलेज स्तर के अध्ययन पाठ्यक्रम में सम्मलित किया जाना चाहिए। साथ ही देश के सुप्रसिद्ध व्यवसायिक विश्विद्यालय में भारतीय दर्शन पर आधारित प्रबंध पर कार्यशाला आयोजित की जानी चाहिए।

सन्दर्भ पुस्तकें-

[1] मुखर्जी, स. (2022). भारतीय आध्यात्मिकता और प्रबंधन पर वैश्विक दृष्टिकोण: एसके चक्रवर्ती की विरासत. स्प्रिंगर।

[2] भट्टाचार्य, सो. और झा, सुमी. (2018). रणनीतिक नेतृत्व मॉडल और सिद्धांत: भारतीय परिप्रेक्ष्य. एमराल्ड पब्लिशिंग।

[3] घुमन, क. (2018). भारतीय प्रबंधन: परिप्रेक्ष्य और मॉडल. ब्लूम्सबरी प्रकाशन।

[4] बसु, दी. और मिरोशिंक, वि. (2017). एक संगठन के रूप में भारत: खंड एक: आदर्शों, विरासत और दृष्टि का एक रणनीतिक जोखिम विश्लेषण. स्प्रिंगर। जर्नल लेख

[5] सतपथी, बि. एंड कर, सु. (2012). ट्रेडिशनल नॉलेज मैनेजमेंट स्टडी ऑफ बस्त्रालय इन्वेस्टिगेशन ऑफ प्रपोज्ड नैरेटिव इंक्वायरी मेथड. प्रबंधन इंडियन जर्नल ऑफ मैनेजमेंट 5(12)।

[6] कौर, ज. और लहरी, बि. (2025). प्राचीन ज्ञान, आधुनिक समाधान: समावेशी विकास के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली. और पॉल सिंह. टेक्नो रिव्यू जर्नल ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, खंड 5, अंक 1

[7] जायसवाल, श्. (2025). भारतीय ज्ञान प्रणाली: आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ पारंपरिक ज्ञान का लाभ उठाना. सीसीएस विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत खंड: 2

[8] कुमार, म. और सिंह, श्. (2025). कालातीत नेतृत्व: भगवान राम, भगवान कृष्ण और अर्थशास्त्र के दृष्टिकोण से आधुनिक संगठनात्मक संदर्भों में प्राचीन भारतीय ज्ञान की प्रासंगिकता की खोज. खंड 5 संख्या 1 आरआरआईजेएम (जनवरी – मार्च)।